बॉडी शेमिंग के कारण टूट गई थीं मृणाल ठाकुर

अपनी हालिया रिलीज फिल्म 'दो दीवाने सहर में' की सफलता का आनंद ले रहीं अभिनेत्री मृणाल ठाकुर ने करियर के शुरुआती दौर के काले दिनों का खुलासा किया है. एक इंटरव्यू में उन्होंने बताया कि इंडस्ट्री में 'परफेक्ट' दिखने के दबाव और ऑनलाइन ट्रोलिंग ने उन्हें मानसिक रूप से तोड़ दिया था. मृणाल ने भावुक होते हुए कहा कि वह कई रातें रोते हुए गुजारती थीं, जिससे सुबह उनकी आंखें सूज जाती थीं. लगातार हो रही आलोचनाओं के कारण उनका आत्मविश्वास इतना डगमगा गया था कि वह खुद की काबिलियत पर ही सवाल उठाने लगी थीं.

मृणाल के इस मुश्किल सफर में सुपरस्टार अक्षय कुमार एक मार्गदर्शक की तरह सामने आए. मृणाल ने साझा किया कि अक्षय ने उन्हें खुद को स्वीकार करने और बाहरी नकारात्मक आवाजों को नजरअंदाज करने की सलाह दी थी. अक्षय ने उनसे कहा था कि प्रोफेशनल जरूरतों और आत्म-सम्मान के बीच संतुलन बनाना जरूरी है. इस सलाह के साथ ही एक युवा प्रशंसक द्वारा उनकी सराहना किए जाने के बाद मृणाल को एहसास हुआ कि उनके नेचुरल कर्व्स और व्यक्तित्व दूसरों के लिए प्रेरणा हैं, न कि कमजोरी.

यह अनुभव बेहद भावनात्मक और अविस्मरणीय : तरुण खन्ना

अभिनेता तरुण खन्ना इस साल अपना जन्मदिन एक बेहद खास और आध्यात्मिक माहौल में मना रहे हैं. पवित्र नगरी उज्जैन में मौजूद तरुण आगामी डिवाइन ड्रैमेडी शो हे भगवान-कितना बदल गया इंसान' की शूटिंग कर रहे हैं. यह शहर उनके लिए न सिर्फ धार्मिक महत्व रखता है, बल्कि अब उनके करियर के एक अहम पड़ाव से भी जुड़ गया है. अपने जन्मदिन को और भी आध्यात्मिक बनाने के लिए तरुण श्री महाकालेश्वर ज्योर्तिलिंग मंदिर में

दर्शन कर महाकाल का आशीर्वाद लेने वाले हैं. शो में महादेव की भूमिका निभा रहे तरुण के लिए यह अनुभव बेहद भावनात्मक और अविस्मरणीय है.

अपनी खुशी साझा करते हुए तरुण खन्ना, जोकि 'हे भगवान कितना बदल गया इंसान' में महादेव का किरदार निभा रहे हैं, कहते हैं, 'यह जन्मदिन मेरे जीवन के सबसे यादगार जन्मदिनों में से एक है.

यश चोपड़ा फाउंडेशन ने 'साथी प्रोग्राम 2026' की शुरुआत की

यश राज फिल्म्स की परोपकारी शाखा यश चोपड़ा फाउंडेशन ने अपने साथी प्रोग्राम के शुभारंभ की घोषणा की है. यह एक वर्ष-भर चलने वाली कल्याणकारी पहल है, जिसका उद्देश्य फिल्म उद्योग से जुड़े कामगारों और उनके परिवारों को निरंतर और संरचित सहायता प्रदान करना है. यह कार्यक्रम एक-बार की राहत से आगे बढ़ते हुए, पूरे वर्ष बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने और जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने पर केंद्रित है.

वर्ष 2026 में यह कार्यक्रम पंजीकृत फिल्म उद्योग कामगारों और उनके परिवारों को सहयोग प्रदान करेगा. इस पहल के तहत मासिक घरेलू सहायता के माध्यम से खाद्य सुरक्षा को मज़बूत करना, दवाओं और आवश्यक जाँचों सहित स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच सुनिश्चित करना, बच्चों की शिक्षा और पढ़ाई से जुड़ी आवश्यकताओं के लिए सहायता, तथा वार्षिक पैतृक स्थान यात्रा सहित आवश्यक यात्रा सहयोग शामिल है. सेवानिवृत्त फिल्म कर्मियों (60 वर्ष और उससे अधिक) और दिव्यांग व्यक्तियों पर विशेष ध्यान दिया गया है, यह मानते हुए कि उनकी स्वास्थ्य संबंधी ज़रूरतें अधिक होती हैं और आय के अवसर सीमित होते हैं.

साथी कार्यक्रम के लिए पात्रता में मान्यता प्राप्त यूनियनों से पंजीकृत सक्रिय फिल्म उद्योग कर्मी, कम आय वाले परिवार, स्कूल या कॉलेज में पढ़ने वाले बच्चों वाले परिवार, तथा निरंतर स्वास्थ्य और चिकित्सकीय आवश्यकताओं का सामना कर रहे वरिष्ठ

कर्मी शामिल हैं. साथी प्रोग्राम 2026 में वर्ष-भर की सहायता को और सशक्त बनाने के लिए कई नए सुधार पेश किए गए हैं. इनमें प्रति लाभार्थी वार्षिक सहायता राशि में वृद्धि, व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार सहायता प्रदान करने के लिए लचीली लाभ संरचना, जाँच और उपचार तक बेहतर पहुँच के लिए विस्तारित स्वास्थ्य प्राथमिकता, तथा लाभों तक आसान पहुँच सुनिश्चित करने के लिए सरल डिजिटल वितरण प्रणालियाँ शामिल हैं.

63 वर्ष के हुए संजय लीला भंसाली

बॉलीवुड के जाने-माने फिल्मकार संजय लीला भंसाली आज 63 वर्ष के हो गये. 24 फरवरी 1963 को मुंबई में जन्में संजय लीला भंसाली ने अपने करियर की शुरूआत विदु विनोद चोपड़ा के सहायक के तौर पर की. भंसाली ने विदु विनोद चोपड़ा की फिल्म परिन्दा,1942 ए लव स्टोरी और करीब में सहायक निर्देशक के तौर पर काम किया.बतौर स्वतंत्र निर्देशक संजय लीला भंसाली ने अपने करियर की शुरूआत वर्ष 1996 में प्रदर्शित फिल्म खामोशी से की. इस फिल्म में नाना पाटेकर,सलमान खान और मनीषा कोइराला ने मुख्य भूमिकायें निभायी थी. यूं तो फिल्म टिकट खिड़की पर कोई खास कमाल नही दिखा सकी लेकिन संजय लीला भंसाली ने अपने बेहतरीन निर्देशन के जरिये दर्शकों के साथ हीं समीक्षकों का भी दिल जीत लिया.

वर्ष 1999 में प्रदर्शित फिल्म हम दिल दे चुके सनम संजय लीला भंसाली के करियर की पहली सुपरहिट साबित हुयी. इस फिल्म में भी संजय लीला भंसाली ने सलमान खान का चुनाव किया. फिल्म में सलमान खान के अलावा ऐश्वर्या राय और अजय देवगन ने मुख्य भूमिका निभायी थी. सलमान खान और ऐश्वर्या राय की जोड़ी को दर्शकों ने बेहद पसंद किया. इस फिल्म के लिये संजय लीला भंसाली सर्वश्रेष्ठ निर्माता-निर्देशक के फिल्म फेयर पुरस्कार से सम्मानित किये गये.

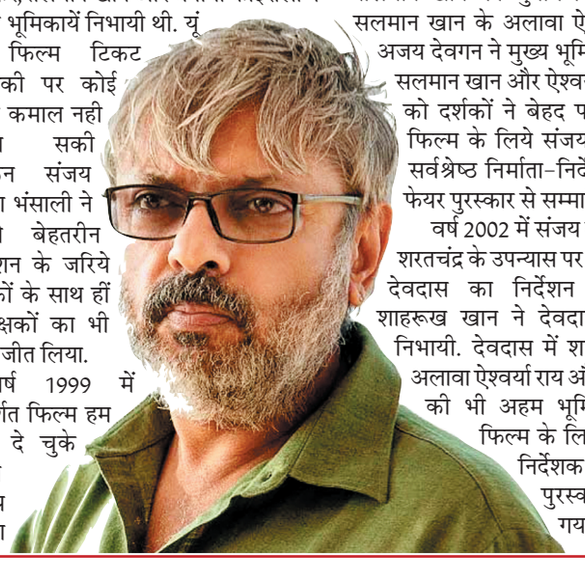

वर्ष 2002 में संजय लीला भंसाली ने शरतचंद्र के उपन्यास पर आधारित फिल्म देवदास का निर्देशन किया जिसमें शाहरूख खान ने देवदास की भूमिका निभायी. देवदास में शाहरूख खान के अलावा ऐश्वर्या राय और माधुरी दीक्षित की भी अहम भूमिकायें थी. इस फिल्म के लिये उन्हें सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का फिल्म फेयर पुरस्कार भी दिया गया.

ईशा मालवीय की डेब्यू फिल्म 'इश्कां दे लेखे' का ट्रेलर रिलीज

भारतीय अभिनेत्री, मॉडल और 'बिग बॉस 17' फेम ईशा मालवीय अब बड़े पर्दे पर अपनी नई पारी की शुरुआत करने जा रही हैं. उनकी डेब्यू पंजाबी फिल्म 'इश्कां दे लेखे' का ऑफिशियल ट्रेलर सोमवार को रिलीज कर दिया गया है. रोमांटिक जॉनर की यह फिल्म 6 मार्च को सिनेमाघरों में दस्तक देगी. ट्रेलर रिलीज के साथ ही सोशल मीडिया पर फिल्म को लेकर जबरदस्त चर्चा शुरू हो गई है.

फिल्म का ट्रेलर स्पीड रिकॉर्ड्स, पैनोरमा स्टूडियो और डायमंडस्टार वर्ल्डवाइड के यूट्यूब चैनलों पर कोलैबोरेशन के तहत रिलीज किया गया है. इन तीनों प्लेटफॉर्म्स के कुल मिलाकर लगभग 50 मिलियन सब्सक्राइबर्स हैं. यही वजह है कि ट्रेलर रिलीज होते ही हजारों व्यूज और लाइक्स मिल गए.

डिस्क्रिप्शन में इसे 2026 की सबसे बहुप्रतीक्षित पंजाबी प्रेम कहानी बताया गया है, जो दर्शकों को एक बार फिर प्यार के रंग में रंगने के लिए तैयार है.फिल्म में ईशा मालवीय के साथ पंजाबी सिनेमा के लोकप्रिय अभिनेता गुरनाम भुल्लर लीड रोल में नजर आएंगे. 2 मिनट 25 सेकंड के ट्रेलर की शुरुआत यूनिवर्सिटी बेल से होती है, जिसके बाद गुरनाम की दमदार एंट्री और एक रोमांटिक डायलॉग सुनाई देता है.ईशा मालवीय फिल्म में 'जसनीत' का किरदार निभा रही हैं.

79वें बाफ्टा फिल्म पुरस्कार समारोह में शामिल हुईं आलिया

अभिनेता ताहा शाह बदुशा ने लंदन में आयोजित 79वें बाफ्टा फ़िल्म पुरस्कार में शिरकत की. बाफ्टा फ़िल्म पुरस्कार में भारतीय सिनेमा के अन्य चर्चित नाम जैसे, आलिया भट्ट और फ़रहान अख़्तर भी मौजूद थे. लंदन के प्रतिष्ठित रॉयल फ़ेस्टिवल हॉल में आयोजित इस समारोह की मेज़बानी एलन कमिंग ने की थी. इस कार्यक्रम में दुनिया भर से कलाकारों और रचनाकारों ने शिरकत कर, अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म निर्माण में उत्कृष्टता का जश्न मनाया.

गौरतलब है कि ताहा शाह बदुशा को व्यापक पहचान 'हीरामंडी' में ताजदार के उनके दमदार अभिनय से मिली, जिसे संजय लीला भंसाली ने निर्देशित किया था. इस नेटफ्लिक्स सीरीज़ को ग्लोबल स्तर पर काफी सराहना मिली थी, जिससे अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के बीच भी ताहा एक जाना माना नाम बन गए. हाल ही में ताहा 'पारो: द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ़ ब्राइड स्लेवरी' में नज़र आए थे, जो एक ऑस्कर-प्रतिस्पर्धी हिंदी फ़ीचर फ़िल्म है. इस फ़िल्म ने न सिर्फ एक गंभीर सामाजिक मुद्दे की ओर ध्यान आकर्षित किया, बल्कि अर्थपूर्ण व वैश्विक रूप से प्रासंगिक कहानियों के प्रति ताहा के झुकाव को और भी मज़बूत किया.

यह शाम भारतीय सिनेमा के लिए गर्व का क्षण रही, जहाँ आलिया भट्ट ने एक पुरस्कार प्रस्तुत किया और फ़रहान अख़्तर की मौजूदगी ने ग्लोबल अवॉर्ड मंच पर भारत की बढ़ती उपस्थिति को रेखांकित किया.

लिसा मिश्रा ने संगीत और अभिनय के बीच संतुलन बनाने पर की बात

अभिनेत्री और गायिका लिसा मिश्रा वर्ष 2026 को ध्यान में रखते हु अपने करियर में संगीत और अभिनय दोनों को साथ लेकर आगे बढ़ना चाहती हैं. मनोरंजन इंडस्ट्री अक्सर कलाकारों को एक ही पहचान तक सीमित कर देती है, लेकिन लिसा मिश्रा ने अलग रास्ता चुनने का फैसला किया है. वर्ष 2026 को ध्यान में रखते हुए लिसा अपने करियर में संगीत और अभिनय दोनों को साथ लेकर आगे बढ़ना चाहती हैं. वह यह मानने को तैयार नहीं हैं कि उन्हें सिर्फ एक ही रास्ता चुनना चाहिए, जैसा कि इंडस्ट्री में अक्सर देखने को मिलता है. फिलहाल 'कॉल मी बे 2' की शूटिंग शुरू हो चुकी है और तय शेड्यूल के अनुसार आगे बढ़ रही है.

सीरत कपूर को मिला खास साथी !

हॉरर कॉमेडी शो 'घरवाली पेड़वाली' में सावी की भूमिका निभा रहीं सीरत कपूर को हाल ही में सेट पर एक अनोखा और यादगार अनुभव मिला. अपनी चुलबुली स्क्रीन प्रेजेंस और व्यस्त शूटिंग शेड्यूल के बीच उन्हें एक खास सह-कलाकार का साथ मिला-एक प्रशिक्षित तोता, जिसका नाम रियो है. इस पंखों वाले साथी ने लंबे शूटिंग घंटों के बीच माहौल को हल्का और खुशनुमा बना दिया.

अपना अनुभव साझा करते हुए सीरत कपूर ऊर्फ सावी ने कहा, 'यह पहली बार था जब मैंने किसी पक्षी, खासकर तोते के साथ शूटिंग की. उसका नाम रियो है और सच कहूं तो वह हमारे ट्रैक का स्टार बन गया था. वह बेहद प्रशिक्षित और अनुशासित था. अपने ट्रेनर्स के संकेतों पर तुरंत प्रतिक्रिया देता था. उसके साथ सीन करना बिल्कुल भी मुश्किल नहीं था, बल्कि एक कलाकार के तौर पर यह बहुत ताज़गी भरा अनुभव रहा. हमारे मौजूदा ट्रैक में मेरे किरदार के उसके साथ कुछ हल्के-फुल्के और भावनात्मक पल हैं, जिनमें एक स्वाभाविक और सकारात्मक एहसास है. तोते की समझदारी और अभिव्यक्ति सच में हैरान करने वाली थी वह सिर तिरछा कर ऐसे प्रतिक्रिया देता था मानो पूरी बात समझ रहा हो.

कृषि जगत

किसान करें हाइब्रिड पपीते की खेती

खेती में अगर कम समय में फसल तैयार हो जाए और लागत भी ज्यादा न लगे, तो किसान की दिलचस्पी अपने आप बढ़ जाती है. आज ऐसे ही एक फायदे वाले विकल्प के रूप में हाइब्रिड पपीते की खेती सामने आ रही है. यह खेती खासकर छोटे और मध्यम किसानों के लिए लाभकारी साबित हो रही है, क्योंकि इसमें लागत कम लगती है और मुनाफा अच्छा निकल आता है.

हाइब्रिड पपीते की खेती में कितनी लागत, कितना मुनाफा- अगर किसान आधे एकड़ जमीन में हाइब्रिड पपीते की खेती करते हैं, तो पूरी फसल तैयार करने में करीब 20 से 25 हजार रुपये तक का खर्च आता है. इसमें पौधों की खरीद, खाद, सिंचाई और देखभाल का खर्च शामिल होता है. वहीं, जब फसल तैयार हो जाती है और बाजार में बिक्री शुरू होती है, तो एक ही फसल से डेढ़ लाख से दो लाख रुपये तक की आमदनी आसानी से हो सकती है. खर्च निकालने के बाद भी किसान के हाथ अच्छा मुनाफा बचता है.

यही कारण है कि हाइब्रिड पपीता अब किसानों के लिए फायदे का सौदा बनता जा रहा है.

सस्ता पौधा, अधिक पैदावार- हाइब्रिड पपीते की सबसे बड़ी खासियत इसकी ज्यादा पैदावार है. बाजार में इसका एक पौधा केवल 7 से 8 रुपये में मिल जाता है.

लीची के फल को काला कर देगा यह कीट

गर्मी का दिन आते ही मार्केट में मीठी और स्वादिष्ट लीची मिलने लगती है. अभी मार्केट में फल नहीं आ रहे हैं, लेकिन पेड़ों पर मंजर यानी फूल आने शुरू हो गए हैं. ऐसे समय में इन पेड़ों की विशेष देखभाल करनी पड़ती है क्योंकि इस महीने में लीची के बागान में स्टिंक बग कीट लगने का काफी खतरा होता है. दरअसल, अचानक मौसम में हो रहे बदलाव के कारण ये कीट पौधों पर हमला कर देते हैं जिससे मंजर और फल के उत्पादन पर असर पड़ता है. ये कीट लीची के लिए बहुत खतरनाक होता है

इन जिलों में कीट का अधिक प्रभाव- फरवरी और अप्रैल महीने की शुरुआत में फलदार वृक्षों में खासकर लीची के पौधों को विशेष देखभाल की जरूरत होती है. क्योंकि इस महीने

लीची में लगने वाले स्टिंक बग कीट बेहद खतरनाक कीट है, जो समय पर नियंत्रण नहीं होने पर भारी नुकसान पहुंचा सकता है. इस कीट का प्रभाव पिछले कई वर्षों में लीची उत्पादन वाले खास जिला मुजफ्फरपुर और पूर्वी चम्पारण के कुछ प्रखंडों में देखा जा रहा है.

स्टिंक बग कीट के जान लें लक्षण- लीची की फसल में लगने वाला स्टिंक बग कीट गुलाबी या भूरे रंग का और बदबूदार होता है. यह कीट झुंड में हमला करता है. इस कीट के नवजात और वयस्क दोनों ही पौधों के कोमल हिस्सों जैसे कि बढ़ती कलियों, पत्तियों, फूल और विकसित होते फल, फलों के डंठल और लीची के पेड़ की कोमल शाखाओं से रस चूसकर फसल को प्रभावित करते हैं. रस चूसने के बाद फल और काले होकर गिर जाते हैं.

स्टिंक बग कीट से बचाव के उपाय
लीची की फसल में लगने वाला स्टिंक बग कीट से ग्रस्त पत्तियों और टहनियों को काटकर जला देना चाहिए. इसके अलावा सुबह के समय पेड़ की शाखाओं को हल्के झटकों से हिलाएं, ताकि कीट नीचे गिर जाए. गिरे हुए कीटों को इकट्ठा करके मिट्टी में दबाकर नष्ट कर दें. वहीं, राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केन्द्र, मुजफ्फरपुर द्वारा बताए गए कीटनाशक का दो छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर करें.

गर्मियों में पशुओं को टीका लगवाने की कर लें तैयारी

बहुत सारी ऐसी बीमारियां हैं जो खासतौर पर गर्मियों के मौसम में पशुओं को परेशानी करती हैं. वहीं पशुपालन की एक हकीकत ये भी है कि पशुओं की बहुत सारी बीमारियों के इलाज के नाम पर रोकथाम के लिए वैक्सीनेशन (टीका) है. यही वजह है कि एनिमल एक्सपर्ट गर्मियां शुरू होते ही पशुओं को टीके लगवाने की सलाह देते हैं. लेकिन टीके लगवाते वक्त कुछ खास बातों का ख्याल रखने की सलाह भी दी जाती है.

ये हैं टीकाकरण कराने के फायदे

- पशुओं में होने वाली बीमारियों से बचाव.
- पशुओं में होने वाली महामारी से बचाव.
- पशुओं से मनुष्यों में होने वाली संक्रामक बीमारियों से बचाव.
- बीमारियो के इलाज से होने वाले आर्थिक नुकसान से बचाव.
- एनिमल प्रोडक्ट से इंसानों में होने वाली बीमारी से बचाव.
- किसानों की पशुपालन में कम लागत से मुनाफा बढ़ता है.
- टीकाकरण के वक्त बरतनी चाहिए ये सावधानियां
- प्रथम टीकाकरण केवल स्वस्थ पशुओं में ही करना चाहिए.
- टीकाकरण से कम से कम दो सप्ताह पहले कृमिनाशक दवाई देनी चाहिये.
- टीकाकरण के समय पशुओं का हेल्दी होना जरूरी है.
- बीमार और कमजोर पशुओं का टीकाकरण नहीं करना चाहिए.
- बीमारी फैलने से करीब 20-30 दिन पहले टीकाकरण करा लेना चाहिए.
- मानकों के अनुसार कोल्ड बॉक्स में रखे टीके ही पशुओं को लगाने चाहिए.
- जहां पशु ज्यादा हों वहां झुण्ड में पशुओं का टीकाकरण करना जरूरी होता है.
- गर्भावस्था के दौरान टीकाकरण नहीं करना चाहिए.
- टीकाकरण का रिकार्ड रखने के लिये हमेशा पशु स्वास्थ्य कार्ड बनाएं.
- रोग फैलने के संभावित समय से करीब 20-30 दिन पहले करना चाहिए.

फरवरी में अरहर की फसल पर इन कीटों का हमला

फरवरी के महीने में जैसे-जैसे तापमान में बदलाव होता है, वैसे-वैसे अरहर की खेती करने वाले किसानों की चिंता भी बढ़ जाती है. इस समय फसल पर फल मक्खी, फली बेधक और पत्ती लपेटक कीट का हमला सबसे ज्यादा देखा जाता है, जो सीधे पैदावार को नुकसान पहुंचाते हैं. ये कीट फलियों को नुकसान पहुंचाते हैं, जिससे दाने कमजोर हो जाते हैं और उनकी क्वालिटी भी खराब हो जाती है. ऐसे में आइए जानते हैं क्या हैं इन कीटों के लक्षण और कैसे करें फसल का बचाव.

फल मक्खी कीट के लक्षण- जब अरहर की फसल में फल मक्खी का प्रकोप होता है, तो इसके लक्षण साफ दिखाई देने लगते हैं. सबसे पहले फलियों की सतह पर बहुत छोटे-छोटे, सुई के नोक जैसे छिद्र नजर आते हैं, जहां संक्रमण होता है, वहां फलियों पर भूरे या काले रंग के धब्बे भी बनने लगते हैं. इसके बाद मक्खी का लार्वा फली के दानों को खुरच-खुरच कर खाने लगता है, जिससे दाने

सिकुड़ जाते हैं और उनकी गुणवत्ता खत्म हो जाती है.

फल मक्खी कीट से बचाव- अरहर की फसल में फल मक्खी बहुत खतरनाक कीट है. इस कीट से बचाव के लिए फसल में कीट दिखते ही डायमेथोएट 30% श्रष्ट का छिड़काव 2 मिली प्रति लीटर पानी की दर से किया जा सकता है. इमिडाक्लोप्रिड का 1 मिली दवा 4 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना भी प्रभावी होता है.

फली बेधक कीट के लक्षण- अरहर की फसल में फली बेधक कीट बहुत नुकसान पहुंचाता है. इसके लक्षण आसानी से पहचाने जा सकते हैं. सबसे पहले फलियों पर गोल-गोल छेद दिखाई देने लगते हैं. इसके बाद कीट का लार्वा फली के अंदर घुसकर दानों को खा जाता है, जिससे दाने पूरी तरह खराब हो जाते हैं.

फली बेधक कीट से बचाव- अरहर की फसल को फली बेधक कीट से बचाने के लिए जब फसल में लगभग 50 प्रतिशत फूल आ जाएं, तब क्लोरएन्ट्रानिलिप्रोल 18.5 SC दवा का छिड़काव 150 मिली प्रति हेक्टेयर की दर से करना चाहिए.

पत्ती लपेटक कीट के लक्षणअरहर की फसल में पत्ती लपेटक कीट के लक्षण आसानी से पहचाने जा सकते हैं. यह कीट पत्तियों को जाले से लपेट देता है, जिससे पत्तियां आपस में चिपक जाती हैं. इसके बाद कीट इन चिपकी हुई पत्तियों को खाकर उन्हें जालीदार बना देता है. अक्सर ऊपरी पत्तियों पर हल्के पीले रंग की छोटी सुंडी दिखाई देती है, जो इसकी पहचान का संकेत होती है.

इस कीट से ऐसे करें बचाव-अरहर की फसल में पत्ती लपेटक कीट से बचाव के लिए अगर खेत में इस कीट के लक्षण दिखाई देने लगे, तो इमामेक्टिन बेंजोएट 5% दवा का 10 ग्राम प्रति 15 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें.